ISSN: 2456–5474 RNI No.UPBIL/2016/68367 Vol.-5* Issue-11* December- 2020
Innovation The Research Concept

संस्मरण और रेखाचित्र विधा में साम्य–वैषम्य

Equivalence in Memoir and Drawing Mode

Paper Submission: 12/12/2020, Date of Acceptance: 24/12/2020, Date of Publication: 27/12/2020

अनिल कुमार गिरि
सहायक प्राध्यापक,
हिन्दी विभाग,
श्री डी0 पी0 वर्मा मेमोरियल डिग्री कालेज, सीतापुर,
उत्तर प्रदेश, भारत

सारांश

संस्मरण अपने व्यापक स्वरूप में संस्मरणकार के स्मृति स्वरूप का लेखा जोखा है। इसमें कथा का प्रमुख पात्र स्वयं लेखक होता है। संस्मरणकार जो स्वयं देखता है, स्वयं अनुभव करता है, उसी का वर्णन करता है। उसके इस वर्णन में स्वयं की अनुभूतियॉ एवं संवेदनाएँ रहती हैं। इस प्रकार संस्मरण लेखक एवं निबन्धकार शैली की दृष्टि से समीप होते है। वास्तव में संस्मरणाकार अपने चारों ओर फैली हुई जीवन की मधुर–कटु स्मृतियों का सृजन करता है। जिसमें जीवन की सम्पूर्ण भावनाएँ समाहित रहती है।

The memoir is an account of the memoir of its memorial in its larger form. In this, the main character of the story is the author himself. The memoirist describes what he sees himself, experiences himself. In this description of him, he has his own feelings and sensations. In this way, memoirs are close in terms of writer and essayist style. In fact, the memoir creates sweet memories of life spread around it. In which all the feelings of life are contained.

मुख्य शब्द : संस्मरण विधाओं, साहित्यिक, स्मृतियाँ, संस्मरणकार, संस्मरर्ण्य, चित्रात्मकता, परिवेश, साकेतिक, अन्वेषण, आत्मनिष्ठा।

Memoirs, Literature, Memoirs, Memoirs, Memoirs, Illustration, Environment, Symbolism, Exploration, Spirituality.

प्रस्तावना

संस्मरण और रेखाचित्र साहित्य की ऐसी विधाएँ हैं। जिनके मध्य सही एवं स्पष्ट रेखा निर्धारित करना दुर्लभ ही नहीं निरर्थक भी है। जिस प्रकार प्रत्येक संस्मरणकार रेखाचित्र कार भी होता है और रेखाचित्रकार संस्मरण लेखक भी अतः इन दोनों विधाओं के मध्य बहुत कुछ साम्य दिखायी देता है। संस्मरण रचना न तो रेखाचित्र के बिना पूरी हो सकती है। और न ही रेखाचित्र बिना संस्मरण के यही कारण है कि कुछ रेखाचित्र संस्मरणात्मक होते हैं और कुछ संस्मरण रेखाचित्र के निकट अर्थात संस्मरणात्मक रेखाचित्र। महादेवी वर्मा की रचनायें 'अतीत के चलचित्र' 'पथ के साथी' 'मेरा परिवार' 'स्मृति की रेखायें' संस्मरणात्मक रेखाचित्र हैं। साहित्यिक विधाओं में रेखाचित्र ही एक ऐसी विधा है। जिसे हम संस्मरण के सर्वाधिक निकट पाते हैं। संस्मरण और रेखाचित्र दोनों में बहुत साम्य है। दोनों विधाएँ एक दूसरें के बाह्य एवं आन्तरिक पक्ष को उद्घाटित करते हैं क्योकि दोनों का सम्बन्ध व्यक्ति विशेष से होता है और दोनों में लेखक का ही दृष्टिकोण प्रमुख होता है। किसी सामान्य या विशिष्ट व्यक्ति से सम्बन्धित स्मृति के प्रत्यक्ष अनुभूति को संस्मरण कहा जाता है। संस्मरण और रेखाचित्र दोनों ही अतीतकालीन स्मृतियों पर आधारित होते हैं। संस्मरण में जहाँ भावना प्रधान होती है, वही रेखाचित्र में तटस्थता की प्रधानता होती है।

अध्ययन के उद्देश्य

प्रस्तुत अध्ययन संस्मरण और रेखाचित्र में कथ्य एवं भाव के आधार पर भिन्नता को स्पष्ट करने का प्रयास किया गया है। संस्मरण एवं रेखाचित्र दोनों ऐसी विधाएँ है। जिनमें स्मृतियॉ ही प्रमुख होती है। व्यक्ति प्रधानता दोनों ही विधाओं की विशेषता है। संस्मरण और रेखाचित्र एक दूसरे के अन्तः एवं बाह्य स्वरूप को स्पष्ट करते है। इसी भाव को स्पष्ट करने का प्रयास किया है।

संस्मरण और रेखाचित्र में साम्य–वैषम्य

संस्मरण और रेखाचित्र में साम्य होते हुए भी अन्तर स्पष्ट रूप से परिलक्षित होता है। दोनों की वर्णन शैली में भिन्नता होती है। संस्मरणाकार स्मृतियों के मधुर–कटु पहलुओं को स्पष्ट करने के लिए संस्मर्ण्य के रूप, आकार, भाव, आवेग और वेशभूषा को उदघाटित करता हुआ बाह्य और आन्तरिक भावों को शब्दों में अंकित करता चलता है, अपनी रचना को रोचक एवं आकर्षक बनाने

के लिए और अधिक संवेदनशीलता के कारण संस्मरणकार कभी–कभी व्यक्ति की व्यक्तिगत विशेषताओं को बढ़ा–चढ़ा कर वर्णित करता है। जबकि रेखाचित्रकार व्यक्ति के सम्पूर्ण जीवन की झाँकी प्रस्तुत करते समय रेखा चित्र में चित्रित व्यक्ति के बाह्य रूप रेखा को अंकित करता है, जो कम शब्दावली में व्यक्ति के सम्पूर्ण व्यक्तित्व को अपनी लेखनी के द्वारा हृदय स्पर्शी बनाने का प्रयत्न करता है। व्यक्ति के साथ–साथ उसके परिवेश को भी चित्रित करने के कारण रेखाचित्र का क्षेत्र अधिक व्यापक एवं विस्तृत हो जाता है। यदि रेखाचित्र में चित्रात्मकता अनिवार्य है, तो संस्मरण में कटु–मधुर अनुभूतियों का स्मृति–चित्रण होने के कारण व्यक्ति के व्यक्तित्व की सम्पूर्ण झलक स्पष्ट हो जाती है। संस्मरण में लेखक घटना और पात्र के साथ स्वयं को भी चित्रित करते हुए देशकाल एवं परिस्थितियों के परिवेश में प्रायः स्वयं आलोकपूर्ण चित्र का अंकन करता है। जबकि रेखाचित्र में बुद्धि एवं भावना के संयोग से गुणों अवगुणों को चित्रित करता हुआ रेखाचित्रकार व्यक्ति की आकृति प्रस्तुत करता है। रेखाचित्र वस्तु परख है, तो वही संस्मरण आत्मपरक। संस्मरण मानव चरित्र का दर्पण है तो रेखाचित्र मानव चरित्र का विश्लेषण होता है। संस्मरणकार तदाम्य की स्थिति में अभिन्न व्यक्ति की छवि को अपनी लेखनी के माध्यम से कागज पर स्वतंत्र रूप से अंकित करता हैं क्योंकि वह स्वयं उस अभिन्न व्यक्ति के सामने होता है। जबकि रेखाचित्र में लेखक कुछ महत्वपूर्ण चुनें हुए शब्दों के माध्यम से सांकेतिक शैली में व्यक्ति के आंन्तरिक एवं बाह्य स्वरूप को चित्रित करता है।

सामान्य रूप से देखा जाये तो संस्मरण और रेखाचित्र में अधिक अन्तर न होकर समानता ही अधिक मिलती है। वास्तव में दोनों विधाएँ एक सी प्रतीत होती हैं। लेकिन ध्यान से देखने पर दोनों में कुछ ऐसे अन्तर दृष्टव्य होते हैं, जो दोनों को दो अलग–अलग विधाओं में विभक्त करते हैं। रामस्वरूप चतुर्वेदी ने संस्मरण और रेखाचित्र के साम्य वैषम्य को इस प्रकार स्पष्ट किया है–

''रेखाचित्र और संस्मरण के बीच विभाजक रेखा बहुत सूक्ष्म है। प्रायः इनका परस्पर अन्तर्भुक्त दिखाई देता है। यदि इन रूपों में अन्तर करना हो तो कई बाते देखी जा सकती है। रेखाचित्र में व्यक्तित्व को समग्रतः और बहुत कुछ स्थिर रूप में देखने की चेष्टा होती है, आकृति को भेद कर अन्तः प्रकृति का अंकन उसका मुख्य उद्देश्य है। संस्मरण व्यक्ति को गत्यात्मक रूप में प्रस्तुत करना चाहता है। व्यक्ति के आन्तरिक बाह्य घटनाओं को महत्व देता है। इसलिए सामान्यतः संस्मरण का पात्र विशिष्ट घटनाओं को भी सम्भव करने वाला कोई महत्वपूर्ण व्यक्ति होगा। जबकि रेखाचित्र में साधारण पात्रों का अंकन भी उतनी ही प्रभुविष्णुता से होता है, जितना की विख्यात चरित्रों का अपनी प्रकृति में रेखाचित्र किसी सीमा तक संस्मरणात्मक होगा पर संस्मरण में रेखाचित्र निहित हो, यह जरूरी नहीं है। कुल मिलाकर अपनी स्थिर वृत्ति के अनुकूल रेखाचित्र की कला अपेक्षा सीमित क्षेत्र में रहती है पर मानव व्यक्तित्व के अन्वेषण में उसकी पहुँच स्वभावतः अधिक है। रेखाचित्र की विशिष्टतः इस बात में भी है कि वह पारम्परिक नायक को हटाकर उसके स्थान पर सामान्य व्यक्तित्व की प्रतिष्ठा करता है।''[1]

''संस्मरण प्रायः प्रसिद्ध व्यक्तियों द्वारा प्रसिद्ध व्यक्तियों के ही लिए लिखे जाते है। जैसे कि रूसी कथाकार गोर्की के अन्य प्रसिद्ध रूसी लेखकों तोल्स्तोय चेखव आदि के संम्बन्ध में लिखें है। तथा हिन्दी में बनारसीदास चतुर्वेदी ने रवीन्द्रनाथ ठाकुर, रामानन्द चटर्जी, आदि के संम्बन्ध में तथा भगवानदास माहौर और अन्य क्रान्तिकारियों ने चन्द्रशेखर आजाद, सरदार भगत सिंह, सुखदेव, राजगुरू आदि प्रसिद्ध क्रांन्तिकारियों के संम्बन्ध में लिखे हैं। इस प्रकार संस्मरण में व्यक्ति पूजा का भाव ही प्रायः प्रमुख रहता है, परन्तु रेखाचित्र के लिए ऐसा कोई संम्बन्ध नहीं होता संस्मरण का संम्बन्ध देशकाल और पात्र तीनों के रहने के कारण इनमें तीनों का वर्णन होता है। परन्तु रेखाचित्र का देश और काल से प्रायः संम्बन्ध नही रहता है। संस्मरण में रेखाचित्र की अपेक्षा आत्मनिष्ठा अधिक होती है। संस्मरण लेखक कोई संस्मरण लिखते समय अपने संम्बन्ध में भी बहुत कहता चलता है। रेखाचित्र लिखने वाला प्रायः अपने कुछ संम्बन्ध में नही कहता है।''[2]

निष्कर्ष

वस्तुतः संस्मरण रेखाचित्र में मध्य कोई एक निश्चित विभाजक रेखा नही खींची जा सकती है। विद्वानों ने गद्यकाव्य, निबन्ध, रिपोर्ताज, आदि के साथ भी संस्मरण की तुलना की है। लेकिन इन सभी विधाओं में एक भी विधा में ऐसी कोई विशेषता नही मिलती जिसका संम्बन्ध संस्मरण से स्थापित किया जा सके। संस्मरण का घनिष्ठ संम्बन्ध केवल रेखाचित्र से माना जा सकता है। संस्मरण और रेखाचित्र प्रायः एक दूसरें के अन्तः–बाह्य को उद्घाटित करते हैं। क्योंकि दोनों का संम्बन्ध व्यक्ति से है और दोनों में लेखक का दृष्टिकोण प्रमुख होता है, दोनों का उद्देश्य किसी के प्रति उसकी प्रतिक्रिया या दृष्टिकोण का बोध कराना होता है। दोनों ही विधाएँ अतीत की स्मृतियों पर आधारित होती है संस्मरण में भावना की प्रमुखता होती है तो रेखाचित्र में तटस्थता का भाव प्रमुख होता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. *हिन्दी साहित्य और संवेदना का विकास पृ0सं0 164 रामस्वरूप चतुर्वेदी, लोक भारती प्रकाशन इलाहाबाद 2008*
2. *साहित्य निबन्ध पृ0सं0 829 राजनाथ शर्मा , संजय बुक सेन्टर वाराणसी*
3. *हिन्दी गद्य विधा का वैविध्य , डॉ पुष्पा बंसल, शारदा प्रकाशन दिल्ली 1987*
4. *हिन्दी का गद्य साहित्य, रामचन्द्र तिवारी, विश्वविद्यालय प्रकाशन वाराणसी 2008*
5. *हिन्दी साहित्य की प्रवत्तियाँ, डॉ जयकिशन प्रसाद खण्डेलवाल, विनोद मन्दिर प्रकाशन आगरा 1989*
6. *साहित्यिको के संस्मरण, ज्योतिलाल भार्गव, साहित्य रत्नालय प्रकाशन कानपुर 1998*